प्रातः क्लास 26/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप, अंग्रेजी में कहा जाता है सुप्रीम फादर। सतयुग में तुम जब चलेंगे तो वहाँ अंग्रेजी आदि कोई भी दूसरी भाषा थोड़े ही होगी। तुम जानते हो सतयुग में हमारा राज्य होता है। उसमें हमारी जो भाषा होगी वही चलेगी। फिर बाद में वह भाषा बदली होती जाती है। अनेकानेक भाषाएँ हो जाती हैं। जैसा2 राजा वैसे उनकी भाषा चलती है। अभी यह तो सभी बच्चे जानते हैं, सिर्फ यहाँ तो नहीं है। सभी सेन्टर्स पर जो भी बच्चे हैं सभी की है एक मत। अपन को आत्मा समझना और बाप को याद करना है ताकि भूत सभी भाग जायें; क्योंकि बाप है पतित पावन। 5 भूतों की तो सभी में प्रवेशता है। आत्मा में ही 5 भूतों की प्रवेशता होती है। फिर उन भूतों का विकारों का नाम भी गिना जाता है देह–अभिमान, काम, क्रोध .....ऐसे नहीं कि सर्वव्यापी कोई ईश्वर है। कब भी कोई कहे ईश्वर सर्वव्यापी है? तो बोलो, सर्वव्यापी आत्माएँ हैं। उन आत्माओं में फिर सर्वव्यापी 5 विकार हैं। ऐसे नहीं कि परमात्मा सर्वव्यापी वा विराजमान है। परमात्मा में फिर 5 भूतों की प्रवेश कैसे होगी। एक एक बात को अच्छी रीत धारण करने से तुम पद्मापदम भाग्यशाली बनते हो। दुनिया वाले रावण सम्प्रदाय क्या कहते हैं और बाप क्या कहते हैं। अब जज करो। हरेक की शरीर में आत्मा है। उस आत्मा में 5 विकार प्रवेश करते हैं। सतयुग में यह 5 भूत होते ही नहीं। यह है ही भूतों की दुनिया। वह है देवी देवताओं की दुनिया। उनमें कोई भूत नहीं है। नाम ही नहीं। नाम ही है डीटी वर्ल्ड। यह है डेविल वर्ल्ड। डेविल असुर को कहा जाता है। कितना दिन रात का फर्क है। कब कोई कहे ईश्वर सर्वव्यापी है तो बोलो, नहीं। सर्वव्यापी तो आत्मा है। उसमें फिर 5 विकार सर्वव्यापी हैं। अभी तुम चेंज होते हो। वहाँ तुम्हारे में कोई भी विकार, कोई भी अवगुण नहीं रहता। तुम्हारे में सर्वगुण होते हैं। तुम 16 कला सम्पूर्ण.....बनते हो। पहले थे फिर नीचे उतरे हो। इस चक्र का भी मालूम पड़ा है। हम 84 का चक्र कैसे फिरे हैं। अभी हम सो आत्मा का दर्शन होता है। अर्थात् इस चक्र का नालेज हुआ। उठते–बैठते चलते–फिरते तुमको यह नालेज बुद्धि में रहनी है। बाप नालेज पढ़ाते हैं। यह रूहानी नालेज बाप भारत में ही आकर देते हैं। कहते हैं ना हमारा भारत। वास्तव में हिन्दुस्तान कहना तो रांग है। तुम जानते हो भारत जब स्वर्ग था तो सिर्फ हमारा ही राज्य था। और कोई धर्म नहीं था। न्यु वर्ल्ड था। नई दिल्ली कहते हैं ना। देहली का नाम असल दिल्ली नहीं था। परिस्तान कहते थे। अभी तो नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली कहते हैं। फिर न नई और पुरानी ही कहेंगे। परिस्तान कहा जावेगा। दिल्ली को कैपीटल भी कहते हैं ना। तो जब इन ल0ना0 का राज्य होगा और कोई भी नहीं होगा। हमारा ही राज्य होगा। अभी तो राज्य नहीं है। इसलिए सिर्फ कहते हैं हमारा भारत देश है। राजाई तो नहीं है। तुम बच्चों की बुद्धि में सारा ज्ञान चक्र लगाता है। बरोबर इस विश्व में पहले2 देवी देवताओं का राज्य था। और किसका भी राज्य नहीं था। जमुना का किनारा, उनको परिस्तान कहा जाता था। देवताओं की कैपीटल दिल्ली ही रही है। तो दिल्ली पर सभी की कशिश होती है। सबसे बड़ी भी है। एकदम सेन्टर है। तो मीठे2 बच्चे जानते हैं पाप तो जरूर हुए हैं। पापात्माएँ बन गये हैं। सतयुग में होते हैं पुण्यात्माएँ। बाप ही आकर पावन बनाते हैं। जिसके तुम शिवजयन्ती भी मनाते हो। अब जयन्ती अक्षर सभी से लगता है। इसलिए इनको फिर शिवरात्रि कहा जाता है। रात्रि का अर्थ तुम्हारे सिवाय तो कोई समझ न सके। सभी की जयन्ती अर्थात् वर्थ डे मनाते हैं। तिथी–तारीख, मिनट आदि सभी लिखते हैं। अभी यह है शिवरात्रि। इसका अर्थ तो समझ न सके। अच्छे2 विद्वान आदि कोई भी नहीं जानते कि शिवरात्रि क्या है। तो मनावें क्या। बाप ने समझाया है रात्रि का अर्थ क्या है। यह जो 5000 वर्ष का चक्र है उसमें सुख और दुख का खेल है। इसको कहा जाता है दिन, इसको कहा जाता है रात। तो बाप दिन और रात के बीच में आते हैं। आधा कल्प है सोझरा आधा कल्प है अंधियारा। भक्ति में तो बहुत ही तिक2 चलती है। यहाँ है सेकण्ड की बात। बिल्कुल ही सहज है। सहजयोग। तुमको पहले जाना है मुक्तिधाम। तुम मुक्तिधाम, जीवनमुक्तिधाम और जीवनबन्ध में कितना समय रहे हो यह तुम बच्चों को याद है। फिर भी तुम घड़ी2 भूल जाते हो। बाप समझाते हैं योग अक्षर है ठीक; परन्तु उन्हों का है जिस्मानी योग। यह है आत्माओं का योग। सन्यासी लोग अनेक प्रकार के हठ

योग आदि सिखलाते हैं तो मनुष्य मुँझ पड़ते हैं। तुम सभी बच्चों का बाप भी है, टीचर भी है तो उनसे योग लगाना पड़े ना। टीचर से पढ़ना होता है। बच्चा जन्म लेते हैं तो पहले बाप से योग होता है। फिर 5 वर्ष के बाद टीचर से योग लगाना। फिर वानप्रस्थ अवस्था में गुरु से योग लगाना पड़ता है। तीन मुख्य याद रहती है। वह तो अलग2 होते हैं। यहाँ एक ही बार बाप आकर बाप भी बनते हैं, टीचर भी बनते हैं। वन्डरफुल है ना। ऐसे बाप को तो जरूर याद करना चाहिए। जन्म–जन्मान्तर तीन को अलग2 याद करते आये हैं। सतयुग में भी बाप से योग होता है। फिर टीचर से होता है। पढ़ने तो जाते हैं ना। बाकी गुरु की वहाँ दरकार नहीं रहती; क्योंकि सभी सभी सदगति में हैं। यह सभी बातें याद करने में क्या तकलीफ है। बिल्कुल ही सहज है। उनको कहा जाता है सहज याद; परन्तु यह है अनकामन। बाप कहते हैं मैं भी थोड़े समय के लिए लोन लेता हूँ। 60 वर्ष में वानप्रस्थ अवस्था होती है। कहते हैं ना साठ लागे लाठ। इस समय सभी को लाठ लगी हुई है। सभी वानप्रस्थ निर्वाणधाम में चले जावेंगे। वह है स्वीटहोम। स्वीटेस्ट होम। उनके लिए कितनी अथाह भक्ति की है। अभी चक्र फिर कर आये हैं। मनुष्यों को यह भी कुछ पता नहीं है। ऐसे ही गपोड़ा लगाये दिया है कि लाखों वर्ष का चक्र है। लाखों वर्ष की बात हो फिर तो रिपीट हो न सके। रेस्ट मिलना ही मुश्किल हो जाये। तुमको विश्राम मिलनी है। उसको कहा जाता है साइलेन्स इनकारपारियल वर्ल्ड। यह है स्थूल स्वीटहोम। वह है मूल स्वीटहोम। आत्मा बिल्कुल छोटी रॉकेट है। इनसे तीखा भागने वाला कोई होता नहीं है। यह तो सबसे तीखा है। एक सेकण्ड में। शरीर छूटा और यह भागा। दूसरा शरीर तो तैयार रहता है। ड्रामा अनुसार पूरे टाइम पर उनको जाना ही है। ड्रामा कितना एक्युरेट है। इनमें कोई इनएक्युरेसी है नहीं। यह तुम जानते हो। बाप भी कहते हैं ड्रामा अनुसार मैं बिल्कुल एक्युरेट टाइम पर आता हूँ। एक सेकण्ड का भी फर्क नहीं पड़ सकता। मालूम कैसे पड़ता है कि इनमें बाप भगवान है, जब नालेज देते हैं। बच्चों को बैठ समझाते हैं। शिवरात्रि भी मनाते हैं ना। मैं शिव कब, कैसे आता हूँ वह तुमको भी पता नहीं है। शिवरात्रि, कृष्णरात्रि मनाते हैं। राम की नहीं मनाते; क्योंकि फर्क पड़ गया ना। शिवरात्रि में कृष्ण की भी मनाई जाती है। तो रोला हो गया ना। भक्तिमार्ग के शास्त्रों को कितना झूठा कर दिया है। माँ बाप झूठे तो सभी रचना झूठी। वहाँ है ही सच। यहाँ है आसुरी रावण राज्य। तो यह समझने की बातें है ना। यह तो है बाबा। बूढ़े को बाबा कहेंगे ना। छोटे बच्चे को बाबा थोड़े ही कहेंगे। कोई2 प्यार से छोटे बच्चे को भी बाबा कह देते हैं। तो इन्होंने भी कृष्ण को प्यार से कह दिया है। बाबा तो तब कहा जाता है जब बड़े हों और फिर बच्चे पैदा करते हैं। कृष्ण खुद ही प्रिन्स उनको बच्चे कहाँ से आये। बाप खुद कहते हैं मैं बुजुर्ग के तन में आता हूँ। शास्त्रों में भी है; परन्तु शास्त्रों की सभी बातें एक्युरेट नहीं होती। कोई2 बात ठीक है। ब्रह्मा की आयु माना प्रजापिता ब्रह्मा की आयु कहेंगे ना। वह तो जरूर इस समय होगा। प्रजापिता ब्रह्मा की आयु खत्म हो जावेगा; क्योंकि यह मृत्युलोक है। वहाँ तो खत्म नहीं होगी। ब्रह्मा की आयु मृत्युलोक में खत्म होगी। यह कोई अमरलोक नहीं है। इनको कहा जाता है पुरुषोत्तम संगमयुग। यह सिवाय तुम बच्चों की और किसकी बुद्धि में नहीं हो सकता। बाप बैठ बताते हैं मीठे2 बच्चों तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। हम बतलाते हैं। तुम 84 जन्म लेते हो, कैसे सो भी तुमको पता पड़ गया है। हरेक युग की आयु 1250 वर्ष है। और इतने2 जन्म लिए हैं। 84 जन्मों का हिसाब है ना। 84 लाख का तो हिसाब हो न सके। इनको कहा जाता है 84 का चक्र। 84 लाख की बात तो याद न रहे। यहाँ कितनी अपरंअपार दुख है। बिच्छू टिण्डन मिसल बच्चे पैदा होते हैं। इसको कहा जाता है घोर नर्क। बिल्कुल ही छी2 दुनिया है। तुम बच्चे जानते हो अभी हम नई दुनिया में जाने लिए तैयार हो रहे हैं। पाप कट जायें तो महान पुण्यात्मा बन जावेंगे। अभी कोई पाप नहीं करना है। एक/दो पर काम कटारी चलाना यह आदि,मध्य,अन्त दुख देना है। अभी यह रावण राज्य पूरा होता है। अभी है कलियुग का अन्त। अभी महाभारी लड़ाई है अन्तिम। फिर कोई लड़ाई आदि होगी ही नहीं। कोई भी यज्ञ नहीं रची जाती। यज्ञ जब रचते हैं तो उसमें हवन करते हैं। बची सुची(खुची) सामग्री सभी स्वाहा कर देते हैं। अभी बाप ने समझाया

है यह है रुद्र ज्ञान यज्ञ। रुद्र शिवबाबा को कहा जाता है। रुद्र माला कहते हैं ना। फूल है रुद्र। फिर मेरु युगल। माला भी युगलों की है। प्रवृत्ति मार्ग है ना। निवृत्ति मार्ग बाद में स्थापन होता है। निवृत्ति मार्ग वालों को प्रवृत्ति मार्ग का रसम रिवाज का कुछ भी पता नहीं। वह तो घरबार छोड़ जंगल में चले जाते हैं। नाम ही पड़ा है सन्यासी। किसका सन्यास। हर्थ एण्ड होम। खाली हाथ निकलते हैं ना। पहले तो गुरु लोग बहुत ही परीक्षा लेते थे। काम कराते थे। असल में सिर्फ आटा ले जाते थे। रसोई नहीं लेते थे। उन्हों को वन में ही रहना है। वन में कन्दमूल फल मिलते हैं। यह भी गायन है। जब सतोप्रधान सन्यासी होते थे तब यह खाते थे। अभी तो बाप मत पूछो क्या2 करते रहते हैं। देखा जाता है छोटेपन में भी बहुत गुरुओं से खराब हो पड़ते हैं। बाप भी गंदा बना देते हैं। इनका नाम ही है विषस वर्ल्ड। वह है वायसलेस वर्ल्ड। तो अपन को विषस समझना चाहिए ना। यह है वैश्यालय। बाप कहते हैं सतयुग पर मेरा नाम रखा हुआ है शिवालय। वायसलेस वर्ल्ड बनाना बाप का ही काम है। यहाँ तो सभी हैं पतित मनुष्य। इसलिए देवी देवता के बदली हिन्दू नाम रख दिया है। बाप तो सभी बातें समझाते रहते हैं। तुम असल में हो ही बेहद के बाप के बच्चे। वह तुमको 21 जन्मों का वरसा देते हैं। फिर रावण राज्य होता है। तुमको जो बाप का वरसा मिला वह 21 पीढ़ी चला। 21 पीढ़ी अब पूरी होती है। यह तो अच्छी रीत समझ में आता है ना। लाखों वर्ष की बात होती तो समझ कैसे सकते। स्कूल में बच्चे हिस्ट्री जागराफी भी अधूरे पढ़ते हैं। सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी तो कोई जानते ही नहीं। तुम बच्चे जानते हो इस्लामी, बौद्धी धर्म को इतना समय हुआ। बाकी दो युगों को लाखों वर्ष देवें तो पता नहीं मनुष्य कितना चिट्टियों मिसल हो जायें। तो बाप बैठ मीठे2 बच्चों को समझाते हैं। जन्म–जन्मान्तर के पाप तुम्हारे सिर पर हैं। पाप कटने लिए ही तुम बुलाते हो। साधु–सन्त आदि सभी पुकारते हैं हे पतित–पावन..... अर्थ कुछ भी नहीं समझते। पतित–पावन कौन है ऐसे ही गाने लग पड़ते। खुद ताली बजाते हैं तो उनको देख सभी बजाते हैं। पावन बन कैसे सकते। घड़ी2 स्नान करने जाते हैं। तो जरूर पतित हैं ना। घड़ी फिर कह देते शिवबाबा को कि सर्वव्यापी है। कुत्ते–बिल्ले में है। कोई उनसे पूछे परमात्मा से योग कैसे लगावें, उनसे मिलें कैसे तो कह देते वह तो सर्वव्यापी है। क्या रास्ता बताते हैं? कह देते वेद–शास्त्र आदि पढ़ने से भगवान मिल जावेगा; परन्तु बाप कह(ते) हैं मैं हर 5000 वर्ष बाद ड्रामा के प्लैन अनुसार आता हूँ। यह ड्रामा का राज़ सिवाय बाप के और कोई नहीं जानते। लाखों वर्ष का ड्रामा तो हो नहीं सकता। अब बाप समझाते हैं यह तो 5000 वर्ष की बात है। कल्प पहले भी बाप ने यही कहा था कि मन्मनाभव। यह है महामंत्र। माया पर जीत पाने का मंत्र है ना। बाप ही बैठ अर्थ समझाते हैं। दूसरा कोई अर्थ नहीं समझाते। गाया भी जाता है सर्व का सद्गति दाता एक। कोई मनुष्य तो हो न सके। देवताओं की भी बात नहीं है। वहाँ तो सुख ही सुख है। वहाँ कोई भक्ति नहीं करते हैं। भक्ति की जाती है भगवान से मिलने लिए। सतयुग में भक्ति होती ही नहीं; क्योंकि 21 जन्मों का वरसा मिला हुआ है। तब गाया भी जाता है दुख में सुमिरण सब करें, सुख में करे न कोये। यहाँ तो अथाह दुख है। घड़ी2 कहते हैं भगवान रहम करो। यह कलियुगी दुख की दुनिया भी सदैव नहीं रहती। सतयुग त्रेता पास्ट हो गई फिर होगी। लाखों वर्ष की बात तो याद भी न रह सके। अभी बाप तो सारी नॉलेज देते हैं। और रचना के आदि, मध्य, अन्त का राज़ भी समझाते हैं। 5000 वर्ष की बात है। तुम बच्चों को ध्यान में आ गया अभी तुम पराये राज्य में हो। तुमको अपना राज्य था ना। यहाँ तो लड़ाई से अपना2 राज्य लेते हैं। हथियारों से, मारा मारी से राज्य लेते हैं। तुमको तो सृष्टि भी सतोप्रधान चाहिए। पुरानी दुनिया खत्म हो नई दुनिया बनती है। इनको कहा जाता है कलियुग पुरानी दुनिया। सतयुग है नई दुनिया। यह भी कोई मनुष्य मात्र को पता नहीं है। सन्यासी लोग कह देते यह अपनी कल्पना है। यहाँ ही सतयुग है यहाँ ही कलियुग है। बाकी अनेक प्रकार के मन के संकल्प हैं। अभी बाप बैठ सभी बातें समझाते हैं। गुरु लोग जो भी बातें सुनाते हैं वह सभी है रांग। सन्यासी घर–बार छोड़ जाते हैं। घर से बाप चला गया तो बाकी निधण के हो गई ना। सारी दुनिया आपस में लड़ती झगड़ती रहती है। कोई धणी धोणी है नहीं। निधणके आरफन्स हैं। एक भी बाप को नहीं जानते हैं।

अगर कोई जानता होता तो परिचय दे ना। सतयुग त्रेता क्या चीज़ है किसको पता थोड़े ही है। तुम बच्चों को बाप अच्छी रीत समझाते रहते हैं। बाप ही सभी को जानते हैं। जानी–जाननहार है अर्थात् नालेजफुल है। मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है, ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर, सुख का सागर है। उनसे ही हमको वरसा मिलना है। बाप पूरा आप समान बनाते हैं। नालेज में आप समान बनाते हैं। जैसे टीचर में आप समान बनाते हैं। बाकी आप समान कैसे बनावेंगे वह तो शादी कर बच्चे पैदा करे तब बाप कहलावेगा। यह तो सभी का बाप एक ही है। सर्व की सद्गति दाता है। बाकी सर्वव्यापी नहीं है। सर्वव्यापी तो आत्मा है। उसमें फिर 5 भूत हैं। कोई भी बात बच्चों की समझ में न आती हो तो पूछ सकते हो। बाकी तो बाप की डायरैक्शन पर चलना है। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। फिर तुम ट्रान्सफर हो जावेंगे। सभी आत्माएँ शरीर छोड़कर चली जावेंगी। संगमयुग पर ही तुम बच्चों को सभी बातों का पता पड़ता है। तुम सतयुग में जाते हो, तो बाकी सभी मुक्तिधाम में चले जाते हैं। सभी आत्माएँ शरीर को यहाँ ही छोड़ चली जावेगी। शिवबाबा की बेहद की सारी बारात पिछाड़ी में जावेगी। सो तो आगे चलकर समझते जावेंगे। हम कौन सा पद पावेंगे। वह भी पता पड़ेगा। पछताना भी यहाँ ही पड़ेगा। सेकण्ड में सा0 होता है। गर्भ जेल में भी सा0 कर फिर सजा खाते हैं। सा0 बिगर सजा मिल न सके। गर्भ जेल में भी कितनी सजाएँ खाते हैं। वहाँ तो गर्भ महल होता है। बच्चों को सारी बातें क्लीयर कर समझाते रहते हैं। बाबा के पास कोई वेद–शास्त्र उपनिषद आदि है क्या। बाप तो कहते हैं यह शास्त्र का भूसा सारा बुद्धि से निकालो। हियर नो भूसा। टॉक नो भूसा। यह समझने की बातें हैं। गोरख धंधे आदि में जाने से यह फिर सभी बातें उड़ जाती हैं। यहाँ फिर भी सात रोज सेफ्टी में रहते हैं। सात रोज का कोर्स कहा जाता है। पाठ भी सात रोज रखते हैं। वास्तव में सात रोज उसको कहा जाता है जो बाहर की कोई भी बात याद न आये। कोई भी चिट्ठी चपाटी नहीं जाये। नहीं तो जरूर ख्यालात आवेगी। इसको भट्ठी कहा जाता है। वहाँ जरा मुश्किल है। हाँ, पाकिस्तान में तुम्हारी भट्ठी थी। कोई थे नहीं। पार्टीशन हुआ तो सभी भाग गये। सभी एक समान काम काज करते थे। तो बाप कितना क्लीयर कर समझाते हैं। बच्चे फिर भी भूल जाते हैं। इसको कहा जाता है मन्मनाभव। वह है गीता का एपिसोड। पुरुषोत्तम संगमयुग है ना। मनुष्य तो बिल्कुल ही घोर–अंधियारे में हैं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

भावनगर से समाचार आया था, भवनगर के नजदीक एक गांव है वहाँ एक बड़ा चण्डका यज्ञ विश्व में शान्ति के लिए रच रहे हैं। जिसमें 151 हवन कुण्ड आदि बनाई है। सो भावनगर निवासियों का विचार है वहाँ स्टाल ले सर्विस करने का सो इसके लिए बाप दादा ने बम्बई निवासियों को डायरेक्शन लिखी है कि वहाँ ऐसे2 बोर्ड लगाओ। निवासी नूरे रत्न कुमारका प्रति सभी सर्विस एबुल बच्चों सहित यादप्यार बाद समाचार कि पत्र तो पाते रहते हैं। अपना स्लोगन कि ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है आत्माएँ सर्वव्यापी हैं, माया सर्वव्यापी है, गीता परमपिता परमात्मा ने गाई है कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर जो अब चल रहा है। पतित–पावन एक परमपिता परमात्मा शिव है न कि गंगा, जमुना। रूहानी ज्ञान स्प्रीचुअल नालेज सिर्फ एक परमपिता परमात्मा शिव सद्गति दाता है। मनुष्य मनुष्य की गति वा सदगति कर नहीं सकता। ऐसी2 प्वाइंट्स जो बार बार समझाई हुई है उनका बड़ा बोर्ड लगा दो। यह कोई की निन्दा नहीं। कल्प 5000 वर्ष का है। हरेक युग 1250 वर्ष का है ऐसे2 बड़े2 बोर्ड पर लिख पब्लिक को साक्षात्कार करना है। अक्सर बच्चे भूल जाते हैं वा डरते रहते हैं। बच्चों में बल कम है देहअभिमान कारण। इसलिए बाप दादा खुद कहते हैं कि समय चाहिए जब कि योगबल का जौहर ज्ञान तलवार में हो। देह–अभिमान तो अथाह है बच्चों में। अपन में समझते कम हैं।